Total No. of Questions - 4] [Total Pages : 3

(2062)

9823

M.A. Examination

SANSKRIT

(सांख्य तथा वेदान्त)

Paper–IV

(Semester–I)

Time : Three Hours] [Max. Marks : Regular : 80 / Private : 100

परीक्षार्थी अपने उत्तरों को दी गयी उत्तर-पुस्तिका (40 पृष्ठ) तक ही सीमित रखें। कोई अतिरिक्त पृष्ठ जारी नहीं किया जाएगा।

नोट : प्रत्येक प्रश्न के सभी भागों के उत्तर एक ही स्थान पर दीजिए। नियमित विद्यार्थियों के लिए प्रत्येक प्रश्न के अङ्क कोष्ठक के बाहर दिए गए हैं। प्राइवेट विद्यार्थियों के लिए अंक कोष्ठक के अन्दर दिए गए हैं।

1. निम्नलिखित कारिकाओं में से किन्हीं **चार** की सप्रसंग व्याख्या करें :

(क) मूलप्रकृतिरविकृतिर्महदाद्याः प्रकृतिविकृतयः सप्त।

षोडशकस्तु विकारो न प्रकृतिर्न विकृतिः पुरुषः।।

(ख) अतिदूरात् सामीप्यादिन्द्रियघातान्मनोऽनवस्थानात्।

सौक्ष्यम्याद् व्यवधानादभिभवात्समानाभिहाराच्च।।

(ग) त्रिगुणमविवेकि विषयः सामान्यमचेतनं प्रसवधर्मि।

व्यक्तं तथा प्रधानं तद्विपरीतस्तथा च पुमान।।

(घ) तस्मात्तत्संयोगादचेतनं चेतनावदिव लिङ्गम्।

गुणकर्तृत्वेऽपि तथा कर्त्तेव भवत्युदासीनः।।

(ङ) उभयात्मकमत्र मनः संकल्पकमिन्द्रियं च साधर्म्यात्।

गुणपरिणाम विशेषान्नानात्वं बाह्य भेदाश्च।।

(च) अन्तः करणं त्रिविधंदशधा बाह्य त्रयस्य विषयाख्यम्।

साम्प्रत्कालं बाह्यं त्रिकालमाभ्यन्तरं करणम्।।

(छ) वैराग्यात् प्रकृतिलयः संसारो भवति राजसाद्रागात्।

ऐश्वर्यादविधातो विपर्ययात्तद्विपर्यासः।। 32(40)

2. सांख्यकारिका के अनुसार पंचविशंति तत्वों का वर्गीकरण स्पष्ट कीजिए।

अथवा

सांख्य दर्शन के अनुसार सत्कार्यवाद का विवेचन कीजिए। 8(10)

3. निम्नलिखित में से किन्हीं **चार** की सप्रसंग व्याख्या करें :

(क) नित्यानि-अकरणे प्रत्यवायसाधनानि सन्ध्यावन्दनादीनि।।

नैमित्तिकानि-पुत्रजन्माद्यनुबन्धीनि जातेष्टयादीनि।।

(ख) ईश्वरस्येयं समष्टिरखिलकारणत्त्वात् कारणशरीरमानन्द-प्रचुरत्वात्कोशवदाच्छादकत्वाच्चानन्दमयकोशः सर्वोपरमत्वात् सुषुप्तिरत एव स्थूल सूक्ष्मप्रपञ्चलयस्थानमिति चोच्यते।।

(ग) शक्तिद्वयवदज्ञानोपहितं चैतन्यं स्वप्रधानतया निमित्तं स्वोपाधि-प्रधानतयोपादानं च भवति।

(घ) एतत्समष्टयु पहितं चैतन्यं सूत्रात्मा हिरण्यगर्भः प्राणश्चेत्युच्यते सर्वत्रानुस्यूतत्वाज्ज्ञानेच्छाक्रियाशक्तिमदुपहित्त्वाच्च।।

(ङ) अस्यैषा समिष्टः स्थूलशरीरमन्नविकारत्त्वादन्न मयकोशः स्थूलभोगायतनत्त्वाच्च स्थूलशरीरं जाग्रादिति च व्यपदिश्यते।।

(च) समानाधिकरणयञ्च विशेषणविशेष्यता।

लक्ष्यलक्षणसम्बन्धः पदार्थप्रत्यगात्मनाम्।।

(छ) संसर्गो वा विशिष्टो वा वाक्यार्थो नात्र सम्मतः।

अखण्डैकरसत्त्वेन वाक्यार्थो विदुषां मतः।। 32(40)

4. वेदान्तसार के अनुसार माया का स्वरूप प्रतिपादित करो।

अथवा

वेदान्तसार के अनुसार सृष्टि प्रक्रिया के विषय में आप क्या जानते हैं? सोदाहरण विस्तृत प्रकाश डालें। 8(10)